स्वाध्याय : पावन स्तोत्रों का पाठ

श्रीरुद्रम्

श्रीरुद्रम् वह पावन स्तोत्र है जिसमें भगवान शिव के रुद्र रूप का स्तुतिगान किया गया है। यह स्वरूप भगवान की दिव्य देदीप्यमान अग्नि को दर्शाता है; यह अग्नि एक योगी की सीमितताओं को शुद्ध कर उसे ऐक्य के बोध में पुनः स्थापित करती है। इसी कारण भगवान रुद्र को योगेश्वर भी कहा जाता है। 'श्री' एक सम्मानसूचक शब्द है जो तेज, मांगल्य व शक्ति को दर्शाता है—ये वे गुण हैं जिन्हें हम भगवान रुद्र के साथ और उनका महिमागान करने वाले इस स्तोत्र के साथ जोड़ते हैं।

बाबा मुक्तानन्द ने सन् १९७८ में पहली बार श्रीरुद्रम् पाठ को गुरुदेव सिद्धपीठ में होने वाले स्वाध्याय के दैनिक अभ्यास के अंग के रूप में शामिल किया।

श्रीरुद्रम्, भारत के प्राचीनतम ग्रन्थों यानी चार वेदों में से एक, कृष्ण यजुर्वेद में पाया जाता है। श्रीरुद्रम् के दो प्रमुख भाग हैं—'नमकम्' और 'चमकम्।'

श्रीरुद्रम् के प्रथम भाग 'नमकम्' में, भगवान के असंख्य स्वरूपों व गुणों का स्तुतिगान करते हुए उन्हें बार-बार नमन [नमः] किया गया है। 'नमकम्' में भगवान शिव का सम्मान करने वाला शिव पंचाक्षर मन्त्र, 'नमः शिवाय' है। ये वर्ण सिद्धयोग के गुरुओं द्वारा प्रदान किए जाने वाले दीक्षा-मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' का मूल हैं। 'नमकम्' का अध्ययन करने से साधक, परमेश्वर के विश्वात्मक और विश्वोत्तीर्ण स्वरूपों के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है अर्थात् वह यह जान पाता है कि वे भगवान ही हैं जिन्होंने सृष्टि की हर वस्तु का रूप धारण कर लिया है और साथ ही वे सृष्टि के परे भी हैं।

श्रीरुद्रम् के द्वितीय भाग में, प्रत्येक पंक्ति में 'च मे' शब्द का बार-बार उच्चारण किया जाता है, इस कारण इसका नाम 'चमकम्' है; 'च मे' का अर्थ है 'मुझे प्राप्त हो।' इसमें साधक सुख-समृद्धि से भरपूर, सांसारिक व आध्यात्मिक जीवन अर्थात् ऐश्वर्य-भोग व मोक्ष-सुख की प्राप्ति के लिए भगवान की कृपा का आवाहन करता है।

भारत में, प्रायः यज्ञों के दौरान श्रीरुद्रम् गाया जाता है। इस पावन स्तोत्र के मन्त्रों का उच्चार स्वयं एक प्रकार का यज्ञ है, यह आराधना का इतना शक्तिशाली साधन है कि यह पाठकर्ताओं के लिए कल्याणकारी योगाग्नि का अनुभव करने का एक साधन बन जाता है।

श्रीरुद्रम् के पाठ में संस्कृत मन्त्रों के उच्चारण व उनकी लय की ओर ध्यान देना आवश्यक है। यह प्रयत्न मन की केन्द्रित रहने की क्षमता को बढ़ाता है और स्वाध्याय पूर्ण होने के बाद पाठकर्ता को ध्यान में उतरने के लिए सहायक होता है। इस तरह, श्रीरुद्रम् साधक की मदद करता है जिससे कि उसका आन्तरिक बल विकसित हो सके, वह अधिक स्पष्टतापूर्वक सोच सके व इसकी अनुभूति कर सके कि वह स्वयं और भगवान एक ही हैं।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

स्वामी शान्तानन्द द्वारा लिखित लेख

श्रीरुद्रम् की रिकॉर्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर पर उपलब्ध है।